

खमैर

(मेलाइना आरबोरिया)



(खमैर वन)



(परिपक्व बीज)



बीज प्रभाग

राज्य वन अनुसंधान संस्थान

पोली पाथर, जबलपुर (म. प्र.)

लिए कीटनाशक जैसे वॉविस्टीन का 1 प्रतिशत सान्द्रता के धोल का प्रयोग किया जाता है।

उपयोगिता – इसकी लकड़ी से इमारती लकड़ी प्राप्त होती है जो फर्नीचर एवं भवन निर्माण में उपयोग की जाती है। इसकी पत्तियों औषधीय एवं रेशम के कीड़ों को खिलाने के काम में आती है। छाल एवं जड़े पेट दर्द, जलन, बुखार बाबसीर आदि में उपयोगी है। इसके फूल कुष्ठ रोग एवं खून संबंधी बीमारियों में उपयोग में आते हैं। फल टॉनिक बलवर्धक, केशवर्धक, वात, एनिमिया आदि के उपचार में काम आता है। इसकी लकड़ी के फर्नीचर में सागौन की लकड़ी से अधिक चमक होती है एवं सागौन की लकड़ी के समकक्ष मजबूती होती है।

सम्पर्क

डॉ. अर्चना शर्मा

वैज्ञानिक
बीज शाखा

राज्य वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर (म.प्र.)

0761-2666529, 2665540

मूल्य रु. 10/-

पर 60 से 70 प्रतिशत तक (ताजे बीज में) अंकुरण प्राप्त होता है। प्राप्त होने वाले अंकुरण में अनुपातिक की तुलना में कम समय लगता है।

अंकुरण हेतु उपयुक्त माध्यम – अंकुरण हेतु बीज की बुआई के लिए प्रारंभिक अवस्था में बारीक रेत का प्रयोग करना चाहिए जिससे अधिक से अधिक अंकुरण प्राप्त किया जा सके।

बुआई का समय – बीज की बुआई हेतु उपयुक्त समय माह जून होता है क्योंकि बीज की जीवन क्षमता काफी कम होती है। इसलिए बीज एकत्रीकरण के तुरंत बाद बुआई करना आवश्यक होता है।

बुआई हेतु उपयुक्त विधि – इसको बीज को सीधी बुआई/सीधे पालीथीन की थैलियों में/जर्मिनेशन ट्रे अथवा क्यारियों में 4 से 5 सेमी. रेत की परत बिछाकर बीज को 1½ से 2 सेमी नीचे दवाकर बुआई करना उपयुक्त होता है तथा ऊपर से छाया की जरूरत नहीं होती, परंतु नियमित सिंचाई व निदाई की आवश्यकता होती है। एक सप्ताह बाद अंकुरण प्रारंभ हो जाता है एवं 25 दिन में पूर्ण अंकुरण प्राप्त हो जाता है।

रखरखाव – यह शीघ्र बढ़ने वाला प्रकाशपेक्षी पौधा होता है जिसके कारण रोपण में पौधों के छत्र एक दूसरे से टकराने पर कीटों के आक्रमण एवं कई बीमारियों से पौधे प्रभावित होने का खतरा बढ़ जाता है। पौधे की जड़ों को दीमक से बचाने के

प्रजाति का नाम – खमैर

वानस्पतिक नाम – मेलाइना आरबोरिया

प्रस्तावना – यह बरबनेसी कुल का सदस्य है स्थानीय भाषा में इसे गम्हार, कुम्भारी, ओर सीवन भी कहते हैं यह खुबसूरत पर्णपाती वृक्ष होता है जो प्रकृतिक रूप से भारत के अधिकांश भागों में 1500 मीटर तक ऊँचाई तक पाया जाना है। यह वृक्ष नम उपजाऊ जहाँ रेतीली दोमट में अच्छी वृद्धि करता है। प्राकृतिक पुरुत्पादन कम होने के कारण वनों में झुट-पुट रूप से पाया जाना है। इसका बीज भी सागौन के बीज की तरह काफी कड़ा होता है। जिसके कारण कड़े छिलके को सड़ने में समय लगता है एवं अंकुरण आने में कठिनाई होती है। इन कठिनाईयों के बावजूद भी प्राकृतिक वनों में इसके नन्हें पौधे देखने को मिलते हैं तो वह भी मवेशियों एवं मृगों द्वारा चाव से खा लिए जाते हैं। अधिकांशतः वृक्ष की गोलाई 1.5 से 2.0 मीटर तक होती है परंतु उपयुक्त वातावरण में 4.5 मीटर तक भी तने की गोलाई देखी गई है। मध्यप्रदेश के शुष्क वनों मंडला को छोड़कर शेष सभी में इसकी गोलाई 0.9 मीटर से अधिक नहीं पहुँच पाती है। यह शाखा रहित सीधे तने एवं विशाल छत्र वाल वृक्ष होता है। इसकी छाल चिकनी भूरी एवं हल्की पीली होती है जिस पर काले छब्बे होते हैं। इसकी शाखाएँ फैली हुई छत्र के रूप में होती हैं। इसके फल 2 से 2½ सेमी. लम्बे अंडाकार होते हैं एक फल में सामान्तः

2 बीज होते हैं। जिससे अंकुरण पश्चात् कभी-कभी 2 से 3 पौधें भी प्राप्त होते हैं।

प्राप्ति स्थान – बालाघाट, मंडला, बैतूल, देवास, छिदवाड़ा, होशंगाबाद, सिवनी आदि।

मृदा का प्रकार – यह रेतीली, दोमट मिट्टी में अच्छी वृद्धि करता है।

बीज चक्र – इसमें प्रतिवर्ष फल आते हैं एवं प्रत्येक फल में सामान्तः दो बीज होते हैं।

अतः इस वृक्ष से प्रतिवर्ष बीज प्राप्त होता है। अंतराष्ट्रीय प्रावेनेन्स ट्रायल से यह अनुमान लगाया गया कि एक प्राकृतिक पेड़ से लगभग 1 किलोग्राम साफ फल प्राप्त हो सकते हैं।

पुष्पन का समय – इसमें फूल फरवरी से मार्च तक लगते हैं। इस समय वृक्ष पूर्णतः पर्णरहित रहता है।

फलन समय – इसके फल अप्रैल से जून तक पकते हैं।

एकत्रीकरण समय – बीज एकत्रीकरण का कार्य माह मई अंत अथवा जून के प्रथम सप्ताह में करना चाहिए।

प्रतिकिलो बीजों की संख्या – इसमें प्रतिकिलो बीज में बीज संख्या 1200 से 1400 तक होती है।

जीवन क्षमता अवधि – बीज की जीवन क्षमता अवधि सामान्यः भंडारण पर 9 से 12 माह तक होती है।

अंकुरण प्रतिशत – बीजों में अंकुरण 40 से 70 प्रतिशत तक होता है।

सामान्य भंडारण की स्थिति में –

प्रथम तीन माह – 40 से 70

तीन से छः माह – 40 से 45

छः से नौ माह – 30 से 35

नौ से बारह माह – 20 से कम

पौध प्रतिशत – अंकुरण पश्चात् 10 से 15 प्रतिशत तक मृत पौध के कारण एकत्रीकरण के तुरंत बाद लगाए गए बीजों से कुल पौध 40 से 50 प्रतिशत तक ही प्राप्त होते हैं। इसके पौधे सूखे और पाले को सह सकते हैं एवं प्रकाशापेक्षी होते हैं अर्थात् छाया में इनकी बढ़त कम हो जाती है फिर भी यह सागौन से अधिक छाया सह सकता है। अधिक सूखा और सूखी रेतीली मिट्टी में यह मर जाता है। अंकुरण की अवस्था में इसके झिंगुर हानि पहुँचाते हैं जबकि बाद में छिद्र कीट से ज्यादा नुकसान होता है।

उपयुक्त भंडारण – इसके बीज की जीवन क्षमता बहुत जल्दी ही क्षीण होती है। इसे प्लास्टिक जार में सिलिका जैल रसायन के साथ मिश्रित कर 1½ वर्ष तक रखने पर 25 से 30 प्रतिशत अंकुरण प्राप्त होता है।

बुआई पूर्व उपचारण – 10% सांद्रता के सल्फ्यूरिक अम्ल के साथ 10 मिनट तक डूबोकर रखने के पश्चात् साफ पानी से धोकर बुआई करने